• कविताएं...

भीगा सा मन है...

भीगा सा मन है, आंखें भी नम
जले हुए रिश्तों में
अब केवल राख है,
झुलस गया मन पंछी,
जली हुई पांख है।
उजड़ गए नीड़ में तिनके भी कम
बर्फीले अंधड़ में
झरे हुए पात हैं,
बिरवे की एक डाल,
और कई घात हैं,
हत्यारी ऋतुएं हैं, निष्ठुर मौसम
लू के किस जंगल में,
भटक गई छांव है,
तपी हुई धरती पर
थके-थके पांव हैं
होता भी नहीं कहीं मंजिल का भ्रम
चंदा की देह पर
मावस के दंश हैं,
घायल हो पड़े हुए
सपनों के हंस हैं
अर्थहीन लगता है सांसों का क्रम
टूट गई पतवारें
औ उद्दंड झोंका है,
चढ़ी हुई नदिया में
बेबस सी नौका है
सफल कहां हो पाए मांझी का श्रम

■ *दिनेश गौतम*

अकथ...

मेरे पास कहने को कुछ नहीं था
सो जन्मों से कहता जाता था
कहने को होता
तो कहकर चुक जाता
कहने को कुछ नहीं था
सो वाणी डोलती न थी
केवल कुछ तरल-सा हुआ करता था
कहने को कुछ नहीं था
सुबह कोहरा रहता था
समय चुपचाप बहता था
मैं हर बार एक हिलते पौधे से
एक अंजुरी फूल चुनकर
धारा में डाल देता था
और चुपचाप प्रणाम करता था!

■ *प्रकाश*

• कहानी/-अजीत कौर

गुलबानो

खुशदिल खान गार्ड की बीवी गुलबानो बेहद सुंदर थी।

आसपास के बीसियों गाँवों में एक! सिर्फ एक! दूसरी बनाई ही नहीं थी बनाने वाले ने।

लम्बी ऊँची पठानी। मुँह जैसे कच्चे दूध का कटोरा हो! अंग जैसे साग के कोमल डंठल! और सुंदर, मानो परियों की रानी! चाँद की कतरन! पर हर परी को जैसे कोई देव अपने पत्थर के किले में कैद करके रखता है, वैसे ही खुशदिल खान गार्ड ने गुलबानो को छिपा रखा था।

यूँ भी सभी पठान अपनी बीवियों को ऐसे छिपाकर रखते हैं मानो ब्याहकर न लाए हों, उन्हें लूटकर लाए हों कहीं से। लेकिन, खुशदिल खान गार्ड की वीवी की तो छाया भी कभी किसी मर्द ने नहीं देखी थी।

खुले मौसम में सभी गाँव की औरतें मिलकर शहर में सौदा खरीदने जातीं। हर औरत उस घड़ी की प्रतीक्षा ऐसे करती, जैसे किसी मेले। सज-धजकर, बुर्के पहन कर घर से निकल पड़तीं। सबसे आगे ढोल बज रहा होता। दूर से ढोल की आवाज सुनकर पठान रास्ता छोड़ देते। गाँव के बाहर जब किसी के देख लेने का भय न रहता तो वे सभी बुर्कों के नकाबों को ऊपर उठा लेतीं और उनके मेहंदी रंगे चाँदी की पाजेबों वाले पाँव ढोल की ताल पर नाचते-नाचते बाँवरे हो जाते। काफी समय से जबरदस्ती रोककर रखा हुआ नृत्य और उल्लास उनकी एड़ियों से फूट पड़ता।

जैसे जैसे वे आगे बढ़तीं, राह में जो जो गाँव आता, उन सबकी औरतें उनके साथ हो लेतीं। लेकिन जब वे खुशदिल खान गार्ड के गाँव गढ़ी महाज खाँ पहुँचती, तो सभी के दिल में एक टीस-सी उठने लग पड़ती। यह दर्द गुलबानों के कलेजे-में एक असहय पीड़ा बनकर रह जाता। गाँव की सब औरतें उनके साथ हो लेतीं, पर बेचारी गुलबानों घर की दीवारों में घिरी रह जाती। खुशदिल खान गार्ड ने कभी जाने की इजाजत ही नहीं दी।

सारी औरतें खुशदिल खान गार्ड के घर जातीं, पिंजरे में बन्द गुलबानो के घर। फिर सब उसके आँगन में नाचना शुरू कर देतीं। ढोल बजता रहता और सेब, अमरूद, भुट्टे, खुरमानियाँ, चिलगोजे, किशमिश, काजू, गुड़ और मिसरी आदि बांटे जाते। सब मिलकर खातीं और गातीं।

गुलबानो को देखकर सबके दिल पर बादल घटाएँ बनकर बरसने-बरसने को हो आते। नीचे झुक आते और नीम-अँधेरा-सा घिर आता। न बरसते, न रोशनी को और हवा को भीतर आने देते।

ढोल की ढम्म-ढम्म में पीड़ के बोल साकार हो उठते। पठानी औरतें नृत्य करतीं तो उनकी एड़ियों से मानो कोई दर्द विलाप कर उठता।

और गुलबानो? उसकी पीड़ा उन रातों की तरह थी जिन्हें अँधेरी राहों पर ठोकर लग जाती है और लाखों सितारे जिनके दर्द में कोयले से सुलग उठते हैं।

औरतें अपनी राह लेतीं। गुलबानो को लगता, उसके घर की दीवारों की तपती हुई भट्टी में उसका जीवन जलकर राख हो जाएगा।

खुशदिल खान गार्ड के यार-दोस्त कहा करते कि उसे भी अपनी बीवी को दूसरी औरतों के संग जाने देना चाहिए। लेकिन वह किसी की न सुनता।

लोग कहते, 'गाय-भैंसों को भी तो झुंड के साथ बाहर भेजते हैं कि नहीं?' वह चुप ही रहता।

जब भी औरतों का झुंड खुशदिल खान गार्ड के घर आता, वह क्रोध से लाल हो उठता और बारी-बारी से सबसे झगड़ने लग पड़ता। दफ्तर में मातहतों पर गरम और घर में नौकरों से नाराज। बच्चों पर बात-बात पर बरसता। बीवी को अहसास कराता कि वो छोटी-सी चींटी से भी गई गुजरी है। हैसियत ही क्या है उसकी? अगर खुशदिल खान से ब्याह न होता उसका, तो क्या करती वो?

वह बर्तन फोड़ देता, चीजें तोड़ देता। मानो तरह आँधी घर के दरवाजे तोड़कर अन्दर आ गई हो।

फिर जैसे-जैसे दिन व्यतीत होने लगते, आँधी खुद-ब-खुद शांत हो जाती। जिन्दगी अपनी राह हो लेती, ऐसी राह पर जहाँ नया कुछ न होता, न ही कुछ नया होने की संभावना होती। गुलबानो के प्राण घर की दीवारों को ऐसे अंगीकार कर लेते, मानो वो उसके जिस्म की ही दूसरी खाल हों।

खुशदिल खान गार्ड के घर में बरसों से चन्दन नाम का एक व्यक्ति दूध देने आया करता था। उसकी निगाह सदा आँगन में कुछ खोजती-सी रहती, लेकिन उसे गुलबानो के दर्शन कभी नहीं हुए।

फिर एक दिन...

चन्दन ने अभी गागर बरामदे में रखी ही थी कि अन्दर आँगन में से गुलबानो गुजरी। उसने चन्दन को नहीं देखा, लेकिन चन्दन को उसकी एक झलक-भर मिल गई। उसे लगा, गुलबानों की खूबसूरती सागर जल से धुली, दूध-सी सफेद, एक चमकदार सीपी के समान है।

चन्दन जहाँ कहीं उठता-बैठता, गुलबानो की बातें करता। उसका चेहरा ऐसा था, उसकी चाल ऐसी, कपड़े फलां रंग के, गहने... उसके हाथ... चलते हुए उसके पाँव...

गुलबानो चन्दन के सामने से आँगन में गुजरी थी - साकार गुलबानो ! गुलबानो खुद ! और चन्दन के मन के अँधेरे आकाश में बिजली-सी कौंध गई।

उनकी आपस में कभी कोई बात नहीं हई। गुलबानों ने चन्दन की तरफ देखा तक नहीं। चन्दन को लगा, जैसे यह सब सपना है, एक ऐसा सपना जो पंख फैलाकर उसके मन में, उसकी आत्मा में, उसकी सोच में, उसके ख्यालों में, उसके समूचे वजूद को ढककर बैठ गया था। इन मुलायम और गरम पंखों के नीचे कई चाहतें, कई सपने, कई कल्पनाएँ, आशाएँ अपनी छोटी, पतली और लम्बी गर्दनें निकालकर निरीह और भयहीन आँखों से संसार का स्तंभित-सी देख रही थीं - उस आकाश, उस धरती को जो लाखों वर्ष पुरानी थी, परन्तु उसके लिए आज ही, अभी, कच्चे दूध सी मीठी और कुनकुनी, सिर्फ उसके लिए बनी थी, सिर्फ उसी के लिए ही।

एक ओर चन्दन था जिसके दिल की दहलीज गुलबानो की एक ही झलक से खुल गई और धरती-आसमान दोनों उसमें समा गए।

दूसरी तरफ खुशदिल खान था जो गुलबानो की बरसों की निकटता पाकर भी पत्थर बना रहा, एक ऐसा पत्थर जो लावे में जल-भुनकर कंकड़ बन जाता है।

एक गुलबानो थी जो खुशदिल खान के पास रहते हए भी उससे कोसों दूर थी।

और उधर एक गुलबानो थी, जो चन्दन से कोसों दूर रहते हुए भी उसकी साँसों में समाई हुई थी।

गुलबानो को उसकी एक सहेली ने बताया कि उसके घर दूध देने वाला चन्दन झूम-झूमकर उसके हाथों, पाँवों, बालों और होंठों की तारीफ में गाता घूमता है।

अगले दिन चन्दन की दूध की गागर से एक धार जब उसके घर की गागर में गिरी तो गुलबानो ने द्वार की फांक में से पलकभर देखा। उसे लगा, दूध की एक धार चन्दन की गागर से निकलकर उसकी अपनी देह में समा गई है।

अब गुलबानो घर के आँगन में चलती तो उसके पाँव थिरक-थिरक जाते। उसका जीवन संगीतमय हो गया। गीतों की कड़ियाँ खुद-ब-खुद उसके होंठों पर आने लगीं। मस्ती के खुमार में आँखों को बन्द किए वह देर तक अपने अन्दर के गुनगुने पानियों में डूबी रहती।

उसके मानस के खाली पड़े आँगन में एक पौधा उगा - चन्दन के प्यार का पौधा। और उसके जीवन के सभी गंधहीन बरस सुवासित हो उठे, महक महक उठे। उसकी आत्मा की सीपी में एक बूँद प्यार की टपकी, और वह इश्क रूपी असली मोती बन गई।

उस बार जब समीप के गाँवों की औरतें ढोल की ताल पर नृत्य करती उसके घर के आँगन में आईं, तो ढोल भी खुश था और गुलबानो भी खुश!

गुलबानो को खुश देखकर सभी औरतें खुश थीं। और गाँव से दूर, नदी के किनारे भैसों को नहलाता चन्दन भी खुश। इस दिन यदि कोई खुश नहीं था तो वह था - खुशदिल खान गार्ड।

आहिस्ता-आहिस्ता चन्दन की कही हुई बातें लोगों की जबानी खुशदिल खान तक पहुँची। उसका सिर घूम गया। इसी हालत में वह घर पहुँचा।

गुलबानो उस समय कपड़े धो रही थी और कपड़े धोने वाले सोटे की ठप्प-ठप्प पके साथ कोई गीत गुनगुना रही थी। खुशदिल खान ने वही सोटा उससे छीनकर उसके सिर में दे मारा और कहा, 'जानती नहीं, गाना कुफ्र है?'

फिर उसकी बाँह पकड़कर घसीटते हुए उसे आँगन में ले आया, सबता, चन्दन वाली बात सच है?'

गुलबानो चुप। अपने जीवन में एक अकेले सच का वह कैसे झूठ कह दे?

खुशदिल खान उसको घसीटते-घसीटते ऊपर छत पर ले गया, 'आ, तुझे चन्दन से मिलवाऊँ... ।'

फिर उसने छत से गुलबानो को धक्का दे दिया। वह धड़ाम से नीचे गली में आ गिरी। एक चीख गूँजी और बस...

आवाज सुनते ही लोग चारों ओर से दौड़ पड़े। खुशदिल खान ने ऊपर छत पर से देखा, उसकी बीवी नंगे मुँह गली में पड़ी है और सब लोग उसे देख रहे हैं। वह दौड़ा-दौड़ा नीचे उतरा। अन्दर से एक मोटी चादर लेकर गली में पहुँचा, और झटपट गुलबानो के मुँह पर डाल दी।

(अनुवाद : सुभाष नीरव)

चन्दन ने अभी गागर बरामदे में रखी ही थी कि अन्दर आँगन में से गुलबानो गुजरी। उसने चन्दन को नहीं देखा, लेकिन चन्दन को उसकी एक झलक-भर मिल गई। उसे लगा, गुलबानों की खूबसूरती सागर जल से धुली, दूध-सी सफेद, एक चमकदार सीपी के समान है।

चन्दन जहाँ कहीं उठता-बैठता, गुलबानो की बातें करता। उसका चेहरा ऐसा था, उसकी चाल ऐसी, कपड़े फलां रंग के, गहने... उसके हाथ... चलते हुए उसके पाँव...

• शायरी...

अपने होने की अर्ज़ानी ख़त्म हुई
मुश्किल से ये तन आसानी ख़त्म हुई
तुझ को क्या मालूम हमारी बीनाई
कैसे हो कर पानी पानी ख़त्म हुई

◆ ◆ ◆

बहता है चुप-चाप बिछड़ कर चोटी से
दरिया की पुर-शोर रवानी ख़त्म हुई
मिट्टी की आवाज़ सुनी जब
मिट्टी ने
सांसों की सब खींचा-तानी ख़त्म हुई

◆ ◆ ◆

दिन पर सारे मौसम बीत गए 'जावेद'
यानी ख़ुश्बू-दार कहानी ख़त्म हुई

-नज़र जावेद

◆ ◆ ◆

डूब कर देख समुंदर हूं मैं आवाज़ों का
तालिब-ए-हुस्न-ए-समाअत मेरा सन्नाटा है
मैं चटानों की तरह जिन की कमीं-गाह बना
रफ्ता रफ्ता उन्हीं लहरों ने मुझे चाटा है

-'मुज़फ़्फ़र' वारसी

• हर एक बात तेरी

हर एक बात तेरी बे-सबात कितनी है
पलटना बात को दम भर में बात कितनी है
अभी तो शाम हुइ है अभी तो आए हो
अभी से पूछ रहे हो के रात कितनी है
वो सुनते सुनते जो घबराए हाल-ए-दिल बोले
बयान कितनी हुई वारदात कितनी है
तेरे शहीद को दूल्हा बना हुआ देखा
रवां जनाज़े के पीछे बरात कितनी है

-'बेख़ुद' देहलवी